हरजिंदर सिंह : निस्वार्थ सेवा की मिसाल

चंदा यादव*

'वो हाथ सदा पवित्र होते हैं...
जो दुआ से अधिक सेवा के लिए उठते हैं...'

निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा सदा के लिए लोगों के जहन में बस जाती है, सेवा ही है जो मनुष्य के हृदय व आत्मा को पवित्र करती है। इस सेवा का कोई मोल नहीं होता यह एक परोपकार है, जिससे मनुष्य के जीवन को सही अर्थ मिलता है। कुछ व्यक्तियों द्वारा की गई ऐसा सेवा ही दूसरों के जीवन की सच्ची शिक्षा बन जाती है, जिसे लोग महसूस कर पाते हैं और उससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन में कुछ अलग करते हैं।

ऐसे ही सेवा-भाव से परिपूर्ण एक व्यक्ति है, जो आज के युग में निःस्वार्थ सेवा भाव की एक मिसाल है, जिन्होंने मानवता की सेवा को ही ईश्वर की आराधना माना और उनकी सेवा से ही उनको पहचाना जाता है। दिल्ली के भजनपुरा निवासी सरदार हरजिन्दर सिंह जिन्होंने 1978 से अपनी ऑटो को एक एम्बुलेंस की तरह प्रयोग करना और सड़क दुर्घटना में घायलों को अस्पताल पहुँचाना शुरू किया और आज 80 वर्ष की उम्र में भी यह सेवा कर रहे हैं।

हरजिन्दर सिंह का जन्म 14 मार्च 1942 को पाकिस्तान के एक प्रांत में हुआ था, जो 1947 में बँटवारे के समय अपने परिवार के साथ अमृतसर में बस गए। इनकी शुरुआती शिक्षा वहीं से हुई। फिर 1964 में पंजाब युनिवर्सिटी चंडीगढ़ से इन्होंने स्नातक किया। इसके पश्चात् इन्होंने कुछ दिन सरकारी नौकरी भी की, परन्तु बड़े भाई के कहने पर उनके साथ बंगाल चले गए। वहाँ सरदार जी बीमार पड़ गए और वापस दिल्ली आ गए। दिल्ली वापसी के बाद रोजी-रोटी के लिए इन्होंने ऑटो चलाना शुरू किया।

80 वर्षीय हरजिन्दर सिंह एक सच्चे, नेकदिल व व्यवस्थित व्यक्ति हैं। यह राजधानी दिल्ली में एक व्यक्ति के रूप में एक संस्था है, जिन्होंने अपनी सेवा व सामाजिक कार्यों से अपनी पहचान बनाई है। 1964 से हरजिन्दर सिंह एक ऑटो रिक्शा चालक हैं, परन्तु यह इतने अनुशासित हैं कि इन 58 वर्षों में इनका एक भी चालान नहीं हुआ है। साथ ही इनके विचार समाज को मार्गदर्शन देने की दिशा में प्रभावशाली हैं। ये कहते हैं- 'नर सेवा ही नारायण सेवा है'

* शोधार्थी
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय।

अपने इस विचार को इन्होंने अपने आचरण में भी उतारा है।

आज से 40 वर्ष पहले दिल्ली में एक सड़क दुर्घटना ने हरजिन्दर सिंह जी के जीवन को बदल दिया। दिल्ली को एक ऐसा हीरो दिया जिसकी जरूरत आज हर शहर, हर सड़क को है।

हम सामान्यतः देखते हैं जब सड़क पर कोई बड़ी दुर्घटना हो जाती है तो वहाँ मौके पर उपस्थित लोग या तो अपने फोन से वीडियो बनाते हैं या पुलिस व एम्बुलेंस का इंतजार करते हैं, ऐसी मानसिकता वाले समाज में हरजिन्दर सिंह जैसे व्यक्ति का होना एक चमत्कार जैसा ही है।

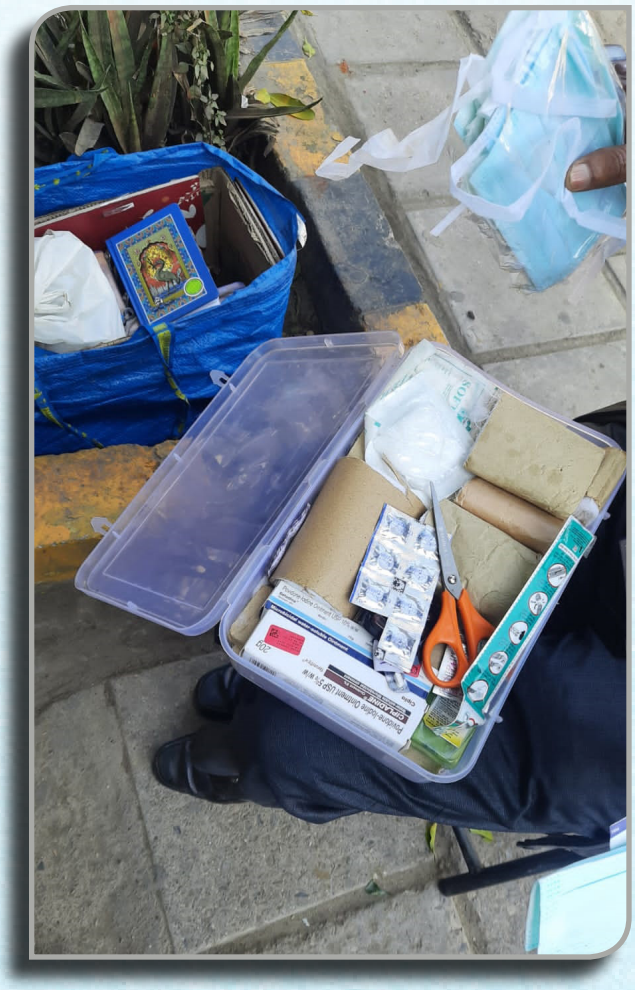

हरजिन्दर सिंह अपने ऑटो एम्बुलेंस में हमेशा एक फर्स्ट-एड बाक्स रखते हैं। सड़क पर घायल व्यक्तियों का सामान्य उपचार करने के साथ ही उन्हें जल्दी से आसपास के अस्पताल तक पहुँचाते हैं।

अपने जीवन में इन्होंने हजारों व्यक्तियों की जान बचाई है।

ये कार्य इनके लिए आसान बिल्कुल नहीं रहा है। इसके लिए कई बार इन्हें पुलिस की जांच से भी गुजरना पड़ा है, कई बार इन्हें रोक के पूछा भी गया है कि कहीं ये घटना आपने तो नहीं की, इन सब बातों के बावजूद हरजिन्दर सिंह पूरे मनोभाव से यह सेवा आज भी करते हैं।

हरजिन्दर सिंह से जितनी प्रेरणा ली जाए कम है। यह ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें अपार निस्वार्थ सेवाभाव है।

यह अपने ऑटो रिक्शा की कमाई का 10वां हिस्सा दवाई बाँटने के लिए खर्च करते हैं।

साथ ही इन्होंने 'दिल्ली सिविल डिफेन्स' से ट्रैफिक-वॉर्डन का कोर्स भी किया है तथा इनको दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की तरफ से कई सर्टिफिकेट भी प्राप्त हुए हैं।

हरजिन्दर सिंह जी के साथ इनके बड़े पुत्र राजा सिंह भी इस सेवा में अपना योगदान दे रहे हैं, साथ ही इन्होंने आठ से दस लोगों को जोड़ कर एक संस्था का निर्माण किया है, जिसका नाम इन्होंने भाई कन्हैया जी सेवा ट्रस्ट रखा है। हरजिन्दर सिंह इनको अपने स्तर पर ट्रेनिंग भी प्रदान करते हैं।

हरजिन्दर सिंह जी के सेवा भाव से प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में दूसरों के लिए कुछ बेहतर करने की प्रेरणा मिलती है। दुःख की बात यह है कि इन्होंने अपने छोटे पुत्र को सड़क दुर्घटना में खो दिया और उनके परिवार का भी ध्यान यह रखते हैं।

यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में ऐसे कुछ व्यक्तियों की मदद करने का जज्बा रखे तो शायद आने वाले समय में समाज व समाज का स्वरूप दोनों ही बेहतर होंगे।

आज इस तेजी से बदलते समाज में हमें हरजिन्दर सिंह जैसे व्यक्तियों की जरूरत है, जो समाज को एक निस्वार्थ सेवाभाव के उदाहरण के साथ समाज में एक मिसाल कायम कर सके क्योंकि निःस्वार्थ सेवाभाव से ही एक सफल जीवन का निर्माण हो सकता है।

❑❑❑❑